Vidya Bhawan, Balika Vidyapith
Shakti Utthan Ashram, Lakhisarai-811311(Bihar)

Class - 12
Subject : Music

Teacher's name : Partha Sarkar
Date - 29.08.2021

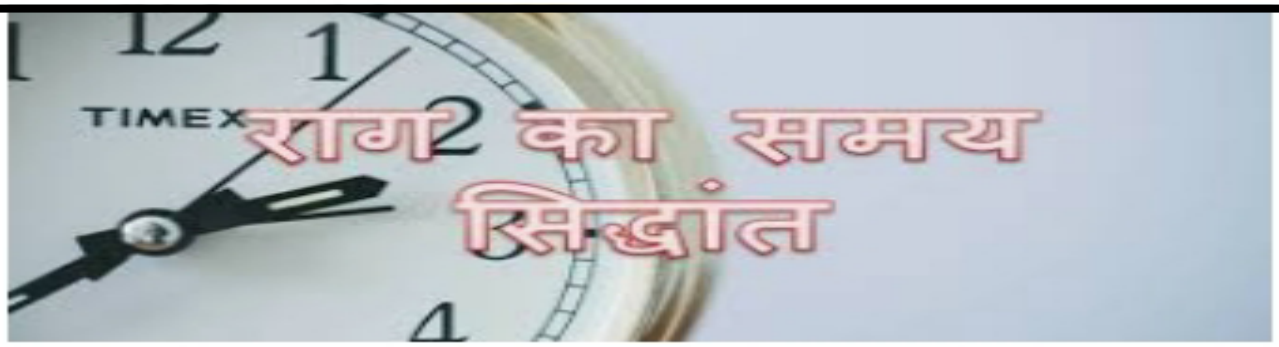

रागों का समय सिद्धांत

राग काल

राग काल निर्धारण के अध्ययन में अध्वदर्शक स्वर व परमेलप्रवेशक राग की समझ आवश्यक है।

अध्वदर्शक स्वर

प्रात:कालीन संधिप्रकाश रागों में शुद्ध मध्यम की प्रबलता के साथ कोमल 'रे ध' का प्रयोग बहुलता से होता है। इस समय के कुछ रागों में तीव्र मध्यम का प्रयोग भी होता है। किन्तु शुद्ध मध्यम की अपेक्षा, वह दुर्बल रहता है। ललित, परज, रामकली इसके उदाहरण हैं। उसके बाद दूसरे प्रहर के और तीसरे प्रहर के रागों में 'रे ध' कोमल वाले राग और फिर 'रे ध' शुद्ध वाले रागों का गायन वादन होता है। दिन के अंतिम प्रहर में कोमल 'ग नी' वाले राग गाये जाते हैं। सायं कालीन संधिप्रकाश रागों में पुन: 'रे ध' कोमल की बहुलता हो जाती है। किन्तु इन रागों में शुद्ध मध्यम की अपेक्षा तीव्र मध्यम प्रबल होता है। दूसरे और तीसरे प्रहर के रागों में क्रमश: 'रे ध' शुद्ध वाले तथा 'ग नी' कोमल वाले रागों की बहुलता हो जाती है। रात्रि के चौथे प्रहर के राग प्रात:कालीन संधिप्रकाश रागों से प्रभावित होने लगते हैं।

प्रचलित रागों की समय व्यवस्था देख कर ही उपरोक्त वर्गीकरण किया जाता है। इन नियमों में एक बात स्पष्ट परिलक्षित होती है वह यह कि प्रात:कालीन व सायंकालीन संधिप्रकाश रागों में 'रे ध' का कोमल होना एक सा ही है किन्तु प्रात:कालीन रागों में शुद्ध मध्यम की प्रबलता तथा सायंकालीन रागों में तीव्र मध्यम की प्रबलता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार के किसी राग को सुन कर और मध्यम की स्थिति देख कर उसके प्रात:कालीन अथवा सायंकालीन होने का निर्णय किया जा सकता है। इस प्रकार राग समय निर्धारण में मध्यम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और मध्यम की इसी विशेषता के कारण उसे 'अध्वदर्शक' कहा जाता है।